श्रुतपंचमी पूजन

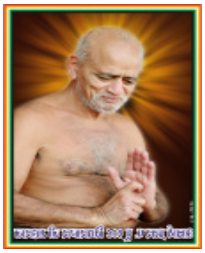

आशीर्वाद
संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित
आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज

रचयिता
अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत
मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तुति
बा.ब्र. संजय भैयाजी मुरैना

श्रुतपंचमी पूजन

स्थापना (दोहा)

पूजित श्रुत अवतार की, पूर्ण कथा का पर्व।
हम पूजें श्रुतपंचमी, करके नमोऽस्तु सर्व॥

(ज्ञानोदय)

जिनशासन की अनादि धारा, महावीर प्रभु बहा गये।
जिनकी वाणी सुनकर गौतम, सबको दे तत्त्वार्थ गये॥
जो धरसेनाचार्य गुरु ने, षट्खंडागम ज्ञान दिया।
भूतबलि मुनि पुष्पदंत ने, जिसे पूर्ण लिपिबद्ध किया॥

(दोहा)

ज्येष्ठ शुक्ल श्रुतपंचमी, तब से हुई महान।
'जयदु जयदु सुद देवदा', प्रकटा दें निज ज्ञान॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...।

(पुष्पांजलिं...)

ज्यों अनादि से श्रुत धारा से, जिनशासन सिंचित होता।
उसके आश्रित नहीं हुए जो, जनम मरण उनका होता॥
जन्म मरण की पीड़ा हरने, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

जलकण हिमकण से भी ज्यादा, शीतलता जिनवाणी की।
जिनवाणी रसपान करे जो, व्यथा मिटे उस प्राणी की॥
निज की ज्वालामुखी शांति को, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

लूट-लूट श्रुतधन श्रद्धालु, निजी खजाना भरते हैं।
पर श्रुत के भंडार अनंतों, रिक्त हुआ ना करते हैं॥
निज श्रुत वैभव अक्षय पाने, हम श्रुत पंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

श्रुत के बाग बगीचे में ही, तरुवर हों रत्नत्रय के।
जो अर्हंत सिद्ध बन खिलते, पुष्प लगें सिद्धालय के॥
श्रुत की एक पंखुड़ी बनने, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सुनो! मील के पत्थर जैसे, श्रुत के मंत्र समझना हैं।
शास्त्र द्रव्य श्रुत रहा अचेतन, इससे चेतन चखना है।
अपना शुद्धभाव श्रुत चखने, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

केवलज्ञान सूर्य के बिन तो, श्रुत आगम ही दीप रहे।
जो हमको सन्मार्ग दिखायें, प्रभु के बहुत समीप रहे॥
आतम दीप प्रज्ज्वलित करने, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

भले धूल हो शास्त्रों पर वे, बन कर शस्त्र प्रहार करें।
पाप दुखों की धूल हटा के, कर्म शत्रु संहार करें॥
आत्म किले पर विजय प्राप्ति को, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

जिन श्रुत का स्कंध अडिग है, हिले न मिथ्या आंधी से।
जिसके फल तो स्वर्ग मोक्ष दें, जो आतम रस दे मीठे॥
महा मोक्षफल का पथ पाने, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

संविधान से देश सुचालित, भक्त चलें जिन-आगम से।
विश्व शांति फिर क्यों ना होगी, मुक्ति मिलेगी खुद हमसे॥
ज्ञान देवता प्रसन्न करने, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

पावन है श्रुतपंचमी, नैमित्तिक त्यौहार।
जो शाश्वत त्यौहार दे, सो नमोऽस्तु बहु-बार॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! श्रुतपंचमी पर्व की, श्रुत की यह अवतार कथा।
जिनशास्त्रों की रचना वाली, सिद्धांतों की सार कथा॥

ऋषभदेव से महावीर तक, दिव्य-देशना तत्त्वों की।
जिनके गणधर ग्रंथ गूँथते, जिनपर श्रद्धा भक्तों की॥१॥
महावीर निर्वाण गये फिर, गये केवली गणधर भी।
किन्तु बुद्धि जब क्षीण हुई तो, द्वादशांग अंतिम गुरु जी॥
श्री धरसेनाचार्य दुखी थे, कैसे श्रुत की हो रक्षा।
तो गिरिनारी पत्र भेजकर, कही संघ से निज इच्छा॥२॥
मुझ में जो श्रुत ज्ञान भरा है, उसे सौंपना मैं चाहूँ।
अतः भेज दो कुछ शिष्यों को, श्रमण संघ करुणा चाहूँ॥
श्रमणसंघ की सहमति से तब, चन्द्रगिरी दो शिष्य गये।
तब धरसेन स्वप्न देखे दो, तरुण बैल पग चाट रहे॥३॥
सुबह जयदु सुद देवदा कह के, हों श्रुत देव सदा जयवंत।
तभी श्रमण दो आकर करते, नमोऽस्तु सादर नन्तानंत॥
समाचार कर परीक्षा करने, एक-एक फिर मंत्र दिया।
सिद्धि हेतु दो-दो अनशन का, बेला वाला नियम दिया॥४॥
हीनाधिक मंत्रों के कारण, कानी देवी प्रकट हुयीं।
अन्य बड़े दाँतों वाली जो, किये व्यवस्थित शुद्ध हुयीं॥
भूतबली वा पुष्पदंत सो, उनके नाम प्रसिद्ध हुए।
जिनको गुरु श्रुत ज्ञान दान दे, अन्य जगह पर भेज दिये॥५॥
षट्खण्डागम ग्रंथ लिखे जो, पूर्ण हुए श्रुतपंचमी को।
जिनशासन के भक्त ऋणी हैं, अतः भजें श्रुतपंचमी को॥
वीरसेन कृत धवला टीका, जय-धवला जिनसेन लिखे।
एक लाख बत्तीस हजारी, श्लोक प्रमाणी ग्रंथ दिखे॥६॥

देवसेनकृत महाधवल जो, है चालीस हजार प्रमाण।
विजय धवल अतिशय धवला के, हैं उपलब्ध न कोई प्रमाण॥
ऐसी श्रुत अवतार कथा ये, रत्नत्रय को पुष्ट करे।
दीन-हीन भूले भटकों को, ऋद्धि-सिद्धि दे तुष्ट करे॥७॥
ज्ञान दान की परम्परा ये, आत्म धर्म भी दान करे।
राग द्वेष जग विभाव हर के, अनंतकेवल ज्ञान भरे॥
ज्ञान महोत्सव मोक्षमहल में, करने अवसर दो स्वामी।
'सुव्रत' को आशीष दान दे, सिद्ध बना दो आगामी॥८॥

(सोरठा)

हरने को अज्ञान, हम पूजें श्रुतपंचमी।
करके नमोऽस्तु ध्यान, हम हों आतम के धनी॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

श्री जिनवर वाणी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, श्रुतदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===